International Journal of Humanities and Social Science Invention
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 4 Issue 9 || September. 2015 || PP.73-75

वर्तमान भारतीय समाज एवं गांधीवाद

डॉ. अपर्णा त्रिपाठी, असि. प्रोफेसर, शिक्षा शास्त्र विभाग
ए.के.पी.जी. कॉलेज, हापुड़

सारांश

2 अक्टूबर अर्थात संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा घोषित विश्व अहिंसा दिवस स्वयं ही गांधी जी का परिचय एवं महत्व प्रस्तुत करता है। गांधी जी के व्यक्तित्व में राजनेता, शिक्षाशास्त्री, अर्थशास्त्री, समाज सुधारक का समावेश है। उनके एकादश व्रत वर्तमान समाज के लिए मार्गदर्शक हैं। गांधीवाद ही वर्तमान भारतीय व वैश्विक समस्याओं यथा- हिंसा, सामाजिक विषमता, धर्म संघर्ष और अतिशय भौतिकवाद का समाधान है।

संकेत शब्द*:* सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, असतेय, अपरिग्रह, श्रम

गांधी दर्शन ने भारतीय व वैश्विक परिदृश्य पर अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। गांधी दर्शन सैद्धांतिक ना होकर वास्तविक अनुभव एवं व्यावहारिक प्रयोग पर अवलंबित है। उन्होंने 28 मार्च 1936 के 'हरिजन' नामक पत्र में लिखा - मैंने जो कुछ भी अपनाया है , वह है ,'शाश्वत सत्य'। जिस का सहारा लेकर मैंने अपनी कठिनाइयों और परेशानियों को हल किया है। 'मेरी बातें शाश्वत सत्य' पर आधारित है जो अनंत काल से चला आ रहा है"। सर्वोदय दर्शन वेदांत दर्शन की नूतन व्याख्या है , जिसमें केंद्र बिंदु व्यक्ति से आगे बढ़कर समष्टि तक हो गया। आत्मोदय के साथ-साथ सबका उदय हो। "यदि सब का उदय होता है तो व्यक्ति का उदय स्वतः होता है"। यह विचार धारा साम्यवादी है, सर्वोदय इस बात को उलटकर यों कहता है कि यदि प्रत्येक व्यक्ति का उदय होता है तो समाज का उदय होता है । गांधी दर्शन मेंसत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, सर्वोदय, श्रम, कार्यानुभव और शिक्षा सभी सम्मिलित है।

सत्य क्या है? इसके संबंध में गांधीजी का मत है-'तुम्हारी आत्मा जो कहती है वही सत्य है।''परंतु सब की आत्मा एक ही बात नहीं कहती। संस्कार भेद के कारण सज्जन और दुर्जन की अंतरात्मा की वाणी में भेद पाया जाता है।अतः शुद्ध अंतरात्मा की वाणी ही सत्य है । यह सत्य वाणी की सत्यता नहीं बल्कि विचारों की सत्यता है और यह केवल हमारी मान्यता संबंधी सत्य नहीं अपितु सनातन सिद्धांत है।

अहिंसा गांधीदर्शन का दूसरा महत्वपूर्ण तत्व है। अहिंसा का शाब्दिक अर्थ है किसी को न मारना या हिंसा न करना। किंतु गांधीजी के अनुसार अहिंसा की अवधारणा कहीं अधिक विस्तृत है। इनके अनुसार मन , वचन और कर्म से हिंसा ना करना भी अहिंसा है। गांधीजी की अहिंसा धारणा के संबंध में सी0एफ0एंड्रयूज़का मत है किअहिंसा में सकारात्मक रूप से भलाई करना उतना ही शामिल है जितना कि नकारात्मक रूप से किसी को हानि ना पहुंचाना। गांधी जी ने स्वयं लिखा है - 'वास्तव में अहिंसा का अर्थ यह है कि आप किसी की भावना को चोट नहीं पहुंचाएंगे , किसी के प्रति यहां तक की उसके प्रति भी जो कि अपने को आपका दुश्मन समझता है, किसी प्रकार कटु या अनुदार विचार का पोषण नहीं करेंगे।' स्पष्ट है कि किसी भी व्यक्ति की हानि होने की भावना या विचार तक मन में लाना अहिंसा के मार्ग से हट जाना है ।सर्वोदयी अहिंसा की यह भावना अद्वितीय है। गांधीजी ने व्यक्तिवादी, नैतिक आधार को सामाजिक रूप प्रदान किया। अहिंसा केवल व्यक्ति का धर्म ही नहीं है अपितु इसकी व्याप्ति राजनीति , अर्थनीति, शिक्षा, विज्ञान आदि सभी क्षेत्रों में होनी चाहिए ।

अहिंसा और सत्य का घनिष्ठ संबंध है। अहिंसा द्वारा सत्य की प्राप्ति होती है। सत्य और अहिंसा एक दूसरे के पूरक हैं। किसी भी प्रकार की हिंसा सत्य की प्राप्ति में बाधक है।

सत्याग्रह विश्व को महात्मा गांधी का अमूल्य उपहार है। सत्य प्राप्ति हेतु गांधी जी ने सत्याग्रह का निरूपण किया। उनका मत है कि सत्याग्रह, हिंसा, नैतिक पतन, क्रूरता को रोकने का अचूक अस्त्र है। शाब्दिक अर्थ में सत्याग्रह से आशय अहिंसात्मक आंदोलन से है किंतु गांधीजी के अनुसार सत्याग्रह से आशय सत्य पर दृढ़ अवलंबन है। सत्याग्रह का तात्पर्य विरोधी के साथ हिंसा ना करके , स्वयं कष्ट सहकर जनमानस का सहयोग लेकर विरोधी को सत्य मार्ग पर लाने से है । सत्याग्रह द्वारा गांधीजी ने अनेक सामाजिक एवं राजनैतिक अव्यवस्थाओं का सामना किया।

गांधीजी के अनुसार सत्याग्रह एक कष्ट साध्य परंतु प्रभावी माध्यम है। सत्याग्रही के लिए आत्मानुशासन, साहस, निस्वार्थ भावना, कल्याण भावना, नैतिक साहस,अहिंसा एवं ब्रह्मचर्य की आवश्यकता होती है।

गांधीजी ने मानव जीवन का लक्ष्य आत्मज्ञान माना है। वे आत्मज्ञान को मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार मानते हैं किंतु इसके साथ ही वे वैराग्य लेकर , एकांतवास करके आत्मज्ञान की खोज कासमर्थन नहीं करते। मनुष्य को आत्मज्ञान तभी प्राप्त होता है जब उसके हृदय में समस्त जीवों के प्रति कल्याण की भावना उत्पन्न हो। गांधी जी ने इसे ही सर्वोदय की संज्ञा दी है। सर्वोदय शोषण का विरोध करता है।

गांधीजी ने मानव जीवन में श्रम को बहुत अधिक महत्व दिया है। उनका विचार है कि श्रम समाजिक समरसता उत्पन्न करता है। श्रम से आशय शारीरिक श्रम ना होकर, निर्भरता से मुक्ति है। यहां श्रम से आशय अपना कार्य स्वयं करने से है। वर्तमान पीढ़ी श्रम को हेय दृष्टि से देखती है ,उसका गांधी जीवन व दर्शन से परिचय होना अत्यावश्यक है।

अस्तेयऔर अपरिग्रह संबंधी गांधीजी के विचार भी वर्तमान भौतिकवादी सोच के परिष्कार हेतु अत्यावश्यक हैं। असतेय अर्थात चोरी ना करना और अपरिग्रह अर्थात केवल आवश्यक वस्तुओं का संग्रह यह दोनों ही घनिष्ट रूप से संबंधित हैं। गांधी जी की जीवन शैली इन व्रतों के पालन का जीवंत उदाहरण है। इनका पालन वर्तमान सामाजिक बुराइयों के उन्मूलन में निसंदेह सहायता कर सकता है । स्वतंत्रता के अनेक दशक बाद भी जाति व्यवस्था भारतीय समाज में विद्यमान है। गांधी जी का अस्पृश्यता निवारण आंदोलन समाज को एकता के सूत्र में बांधता है गांधी । गांधीजी का विचार है कि सभी में ईश्वर का अंश है ,सभी में समान रक्त प्रवाहित है अतः अस्पृश्यता निवारण वह सर्वोदया द्वारा ही भारतीय समाज की नीव सुदृढ़ की जा सकती है।

महात्मा गांधी का दर्शन सत्य, अहिंसा व समानता पर आधारित आदर्श समाज की स्थापना पर बल देता है। उन्होंने शिक्षा को माध्यम माना तथा बेसिक शिक्षा योजना प्रस्तुत की । यह शिक्षा योजना उनके दर्शन को वास्तविक धरातल पर उतारने में अत्यधिक सहायक है। यह शिक्षा व्यवस्था व्यक्ति वे देश को आत्मनिर्भर बनाने के साथ-साथ श्रम की गरिमा , स्वाभाविक अनुभव, क्रिया शीलता वे लोकतांत्रिक जीवन के महत्व को स्थापित करती है।

आज जब आतंकवाद, जनसंख्या विस्फोट, पर्यावरण प्रदूषण, बेरोजगारी, निर्धनता, निरक्षरता, राजनैतिक व आर्थिक अस्थिरता, रंगभेद, धार्मिक कट्टरता, जातिवाद, संप्रदायवाद, युद्ध व विस्थापन, मानवाधिकार हनन, नैतिक पतन, स्त्रियों व बच्चों के विरुद्ध हिंसा एवं शोषण आदि वैश्विक व राष्ट्रीय संकट की सूची लंबी होती जा रही है, जब यह सामाजिक संकट समय के साथ विकराल होते जा रहे हैं तब गांधीदर्शन अत्यधिक सम्यक एवं उपयोगी प्रतीत हो रहा है। गांधीदर्शन के मूलतत्वों , सत्य व अहिंसा के आधार पर यह दृढ़ता पूर्वक कहा जा सकता है कि नकारात्मक विरोध की अपेक्षा रचनात्म कता अधिक प्रभावी है , मानवीय आचरण की पवित्र भावनाओं को जगाकर समाज से शोषण को मिटाया जा सकता है। उनकी हस्त कौशल कि शिक्षा वर्तमान में 'कौशल विकास' बन गई है । गांधी जी के आदर्शों का अनुकरण करके हम विभिन्न समस्याओं का सामना सफलतापूर्वक कर सकते हैं तथा इन्हीं आदर्शों द्वारा राष्ट्र का कल्याण संभव है।

संदर्भ

1. अहुजा, राम, सामाजिक समस्याएं(2002)रावल पब्लिकेशन
2. एंड्रयूज़ एफ़ चार्ल्स, महात्मा गांधी: हिस लाइफ एंड आइडीयाज़ (2005) जैको पब्लिशिंग हाउस
3. चांदकिरण, शिक्षा एक विवेचन (2004) नई दिल्ली, रवि बुक्स
4. ओडी एल.के, शिक्षा कि दार्शनिक पृष्ठभूमि (1983) राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकैडमी
5. प्रभाकर विष्णु , गांधी समय समाज और संस्कृति (2000) नई दिल्ली वाणी प्रकाशन
6. संपूर्ण गांधी वांग्मय, प्रकाशन विभाग सूचना प्रसारण मंत्रालय, दिल्ली तथा नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद
7. शेषण,टी.एन, भारत पतन की ओर